==========

AVYAKT MURLI

01 / 12 / 89

==========

01-12-89 ओम शान्ति अव्यक्त बापदादा मधुबन

# स्वमान से ही सम्मान की प्राप्ति

अव्यक्त बापदादा अपने बच्चों प्रति बोले

आज बापदादा चारों ओर के स्वमानधारी बच्चों को देख रहे हैं। स्वमानधारी बच्चों का ही सारा कल्प सम्मान होता है। एक जन्म स्वमानधारी, सारा कल्प सम्मानधारी। अपने राज्य में भी राज्य-अधिकारी बनने के कारण प्रजा द्वारा सम्मान प्राप्त होता है और आधा कल्प भक्तों द्वारा सम्मान प्राप्त करते हो। अब अपने लास्ट जन्म में भी भक्तों द्वारा देव आत्मा वा शक्ति रूप का सम्मान देख रहे हो और सुन रहे हो। कितना सिक व प्रेम से अभी भी सम्मान दे रहे हैं! इतना श्रेष्ठ भाग्य कैसे प्राप्त किया! मुख्य सिर्फ एक बात के त्याग का यह भाग्य है। कौन-सा त्याग किया? देह अभिमान का त्याग किया। क्योंकि देह अभिमान के त्याग बिना स्वमान में स्थित हो ही नहीं सकते। इस त्याग के रिटर्न में भाग्यविधाता भगवान ने यह भाग्य का वरदान दिया है। दूसरी बात - स्वयं बाप ने आप बच्चों को स्वमान दिया है। बाप ने बच्चों को चरणों के दास वा दासी से अपने सिर का ताज बना दिया। कितना बड़ा स्वमान

दिया! ऐसे स्वमान प्राप्त करने वाले बच्चों का बाप भी सम्मान रखते हैं। बाप बच्चों को सदा अपने से भी आगे रखते हैं। सदा बच्चों के गुणों का गायन करते हैं। हर रोज सिक व प्रेम से यादप्यार देने के लिए परमधाम से साकार वतन में आते हैं। वहाँ से भेजते नहीं लेकिन आकर देते हैं। रोज यादप्यार मिलता है ना। इतना श्रेष्ठ सम्मान और कोई दे नहीं सकता। स्वयं बाप ने सम्मान दिया है, इसलिए अविनाशी सम्मान अधिकारी बने हो। ऐसे श्रेष्ठ भाग्य को अनुभव करते हो? स्वमान और सम्मान - दोनों का आपस में सम्बन्ध है।

स्वमानधारी अपने प्राप्त हुए स्वमान में रहते हुए स्वमान के सम्मान में भी रहता और दूसरों को भी सम्मान से देखता, बोलता वा सम्पर्क में आता है। स्वसम्मान का अर्थ ही है स्व को सम्मान देना। जैसे बाप विश्व की सर्व आत्माओं द्वारा सम्मान प्राप्त करने वाले हैं, हर एक सम्मान देते। लेकिन जितना ही बाप को सम्मान मिलता है उतना ही सब बच्चों को सम्मान देते हैं। जो देता नहीं है तो देवता बनता नहीं। अनेक जन्म देवता बनते हो और अनेक जन्म देवता रूप का ही पूजन होता है। एक जन्म ब्राह्मण बनते हो लेकिन अनेक जन्म देवता रूप में राज्य करते वा पूज्य बनते हो। देवता अर्थात् देने वाला। अगर इस जन्म में सम्मान नहीं दिया तो देवता कैसे बनेंगे, अनेक जन्मों में सम्मान कैसे प्राप्त करेंगे? फालो फादर? साकार स्वरूप ब्रह्मा बाप को देखा - सदा स्वयं को वर्ल्ड सर्वेन्ट (विश्व-सेवाधारी) कहलाया, बच्चों का सर्वेन्ट कहलाया और बच्चों को

मालिक बनाया। सदा मालेकम् सलाम किया। सदा छोटे बच्चों को भी सम्मान का स्नेह दिया, होवनहार विश्व-कल्याणकारी रूप से देखा। कुमारियों वा कुमारों को, युवा स्थिति वालों को सदा विश्व की नामीग्रामी महान आत्माओं को चैलेंज करने वाले, असम्भव को सम्भव करने वाले, महात्माओं के सिर झुकाने वाले - ऐसे पवित्र आत्माओं को सम्मान से देखा। सदा अपने से भी कमाल करने वाले महान आत्मा समझ सम्मान दिया ना! ऐसे ही बुजुर्ग- आत्माओं को सदा अनुभवी आत्मा, हमजिन्स आत्मा को सम्मान से देखा। बांधेले या बांधेलियों को निरन्तर याद में नम्बरवन के सम्मान से देखा। इसलिए नम्बरवन अविनाशी सम्मान के अधिकारी बने। राज्य सम्मान में भी नम्बरवन - विश्व-महाराजन और पूज्य रूप में भी बाप की पूजा के बाद पहले पूज्य - लक्ष्मी-नारायण ही बनते हैं। तो राज्य सम्मान और पूज्य सम्मान - दोनों में नम्बरवन हो गये। क्योंकि सर्व को स्वमान, सम्मान दिया। ऐसे नहीं सोचा - सम्मान देवे तो सम्मान दूँ। सम्मान देने वाले निंदक को भी अपना मित्र समझते। सिर्फ सम्मान देने वाले को अपना नहीं समझते लेकिन गाली देने वाले को भी अपना समझते। क्योंकि सारी दुनिया ही अपना परिवार है। सर्व आत्माओं का तना आप ब्राह्मण हो। यह सारी शाखाएं अर्थात् भिन्न-भिन्न धर्म की आत्माएं भी मूल तना से निकली हैं। तो सभी अपने हुए ना। ऐसे स्वमानधारी सदा अपने को मास्टर रचयिता समझ सर्व को सम्मान-दाता

बनते हैं। सदा अपने को आदि देव ब्रह्मा के आदि रत्न, आदि पार्टधारी आत्माएं समझते हो? इतना नशा है?

तो सभी ने सुना - बच्चों का सम्मान क्या है, बूढ़ों का सम्मान क्या है, युवा का क्या है? आदि पिता ब्रह्मा ने हमको ऐसे सम्मान से देखा। कितना नशा होगा! तो सदा यह स्मृति रखो कि आदि आत्मा ने जिस श्रेष्ठ दृष्टि से देखा, ऐसी ही श्रेष्ठ स्थिति की सृष्टि में रहेंगे। ऐसे अपने से वायदा करो। वायदे तो करते रहते हो ना! बोल से भी वायदा करते हो, मन से भी करते हो और लिखकर भी करते हो और फिर भूल भी जाते हो। इसलिए वायदे का फायदा नहीं उठा पाते। याद रखो तो फायदा भी उठाओ। सभी अपने को चेक करो - कितने बार वायदा किया है और निभाया कितने बार है? निभाना आता है वा सिर्फ वायदा करना आता है? वा बदलते रहते हो - कभी वायदा करने वाले, कभी निभाने वाले?

टीचर्स क्या समझती हैं? निभाने वालों की लिस्ट में हो ना। टीचर्स को बापदादा सदा साथी शिक्षक कहते हैं। तो साथी की विशेषता क्या होती है? साथी समान होता है। बाप कभी बदलता है क्या? टीचर्स भी वायदा और फायदा - दोनों का बैलेंस रखने वाली हैं। वायदे बहुत और फायदा कम हो - यह बैलेंस नहीं होता। जो दोनों का बैलेंस रखते हैं उसको वरदाता बाप द्वारा यह वरदान वा ब्लैसिंग मिलती है। वह सदा दृढ़ संकल्प से कर्म में सफलतामूर्त बनते हैं। साथी शिक्षक का यही विशेष कर्म है। संकल्प और कर्म समान हों। संकल्प श्रेष्ठ और कर्म साधारण हो जाए - इसको

समानता नहीं कहेंगे। तो सदा टीचर्स अपने को "साथी शिक्षक" अर्थात् "शिक्षक बाप समान" - इस स्मृति में समर्थ बन चलो। बापदादा को टीचर्स की हिम्मत पर खुशी होती है। हिम्मत रख सेवा के निमित्त तो बन गये हैं ना। लेकिन अभी सदा यह स्लोगन याद रखो- "हिम्मते टीचर, समान शिक्षक बाप"। यह कभी नहीं भूलना। तो स्वत: ही समान बनने वाला लक्ष्य - "बापदादा" आपके सामने रहेगा अर्थात् साथ रहेगा। अच्छा!

चारों ओर के स्वमानधारी सो सम्मानधारी बच्चों को बापदादा नयनों के सम्मुख देखते हुए सम्मान की दृष्टि से यादप्यार दे रहे हैं। सदा राज-सम्मान और पूज्य-सम्मान के समान साथी बच्चों को यादप्यार और नमस्ते।

बिहार ग्रुप:-

1. सभी अपने को स्वराज्य अधिकारी समझते हो? स्व का राज्य मिला है या मिलने वाला है? स्वराज्य अर्थात् जब चाहो, जैसे चाहो वैसे कर्मेन्द्रियों द्वारा कर्म करा सको। कर्मेन्द्रिय-जीत अर्थात् स्वराज्य अधिकारी। ऐसे अधिकारी बने हो या कभी-कभी कर्मेन्द्रियां आपको चलाती हैं? कभी मन आपको चलाता है या आप मन को चलाते हो? कभी मन व्यर्थ संकल्प करता है या नहीं करता है? अगर कभी-कभी करता है तो उस समय स्वराज्य अधिकारी कहेंगे? राज्य बहुत बड़ी सत्ता है। राज्य सत्ता चाहे जो कर सकती है, जैसे चलाने चाहे वैसे चला सकती है। यह मन-बुद्धिसंस्कार

आत्मा की शक्तियाँ हैं। आत्मा इन तीनों की मालिक है। यदि कभी संस्कार अपने तरफ खींच लें तो मालिक कहेंगे? तो स्वराज्य-सत्ता अर्थात् कर्मेन्द्रिय-जीत। जो कर्मेन्द्रिय-जीत है वही विश्व की राज्य-सत्ता प्राप्त कर सकता है। स्वराज्य अधिकारी विश्व-राज्य अधिकारी बनता है। तो आप ब्राह्मण आत्माओं का ही स्लोगन है कि 'स्वराज्य ब्राह्मण जीवन का जन्म-सिद्ध अधिकार है।' स्वराज्य अधिकारी की स्थिति सदा मास्टर सर्वशक्तिवान है, कोई भी शक्ति की कमी नहीं। स्वराज्य अधिकारी सदा धर्म अर्थात् धारणामूर्त भी होगा और राज्य अर्थात् शक्तिशाली भी होगा। अभी राज्य में हलचल क्यों है? क्योंकि धर्म-सत्ता अलग हो गई है और राज्यसत्ता अलग हो गई है। तो लंगड़ा हो गया ना! एक सत्ता हुई ना। इसलिए हलचल है। ऐसे आप में भी अगर धर्म और राज्य - दोनों सत्ता नहीं हैं तो विघ्न आयेंगे, हलचल में लायेंगे, युद्ध करनी पड़ेगी। और दोनों ही सत्ता हैं तो सदा ही बेपरवाह बादशाह रहेंगे, कोई विघ्न आ नहीं सकता। तो ऐसे बेपरवाह बादशाह बने हो? या थोड़ी-थोड़ी शरीर की, सम्बन्ध की .... परवाह रहती है? पांडवों को कमाने की परवाह रहती है। परिवार को चलाने की परवाह रहती है या बेपरवाह रहते हैं? चलाने वाला चला रहा है, कराने वाला करा रहा है - ऐसे निमित्त बन कर करने वाले बेपरवाह बादशाह होते हैं। "मैं कर रहा हूँ" - यह भान आया तो बेपरवाह नहीं रह सकते। लेकिन "बाप द्वारा निमित्त बना हुआ हूँ" - यह स्मृति रहे तो बेफिकर वा निश्चिंत जीवन अनुभव करेंगे। कोई चिंता नहीं। कल क्या होगा - उसकी

भी चिंता नहीं। कभी यह थोड़ी-सी चिंता रहती है कि कल क्या होगा, कैसे होगा? पता नहीं विनाश कब होगा, क्या होगा? बच्चों का क्या होगा? पोत्रों-धोत्रों का क्या होगा - यह चिंता रहती है? बेपरवाह बादशाह को सदा ही यह निश्चय रहता है कि - जो हो रहा है वह अच्छा, और जो होने वाला है वह और भी बहुत अच्छा होगा। क्योंकि कराने वाला अच्छे-ते-अच्छा है ना! इसको कहते हैं - निश्चयबुद्धि विजयी। ऐसे बने हो या सोच रहे हो? बनना तो है ही ना! इतनी बड़ी राजाई मिल जाए तो सोचने की क्या बात है? अपना अधिकार कोई छोड़ता है? झोंपड़ी वाले भी होंगे, थोड़ी-सी मिलकियत भी होगी - तो भी नहीं छोड़ेंगे। यह तो कितनी बड़ी प्राप्ति है! तो मेरा अधिकार है - इस स्मृति से सदा अधिकारी बने उड़ते चलो। यही वरदान याद रखना कि - "स्वराज्य हमारा जन्म-सिद्ध अधिकार है।" मेहनत करके पाने वाले नहीं, अधिकार है। अच्छा! बिहार माना सदा बहार रहने वाले। पतझड़ में नहीं जाना। कभी आँधी-तूफान न आये, सदा बहार। अच्छा!

2. अपने को रूहानी दृष्टि से सृष्टि को बदलने वाला अनुभव करते हो?

सुनते थे कि दृष्टि से सृष्टि बदल जाती है लेकिन अभी अनुभवी बन गये। रूहानी दृष्टि से सृष्टि बदल गई ना! अभी आपके लिए बाप संसार है, तो सृष्टि बदल गई। पहले की सृष्टि अर्थात् संसार और अभी के संसार में फर्क हो गया ना! पहले संसार में बुद्धि भटकती थी और अभी बाप ही संसार हो गया। तो बुद्धि का भटकना बंद हो गया, एकाग्र हो गई। क्योंकि पहले की जीवन में, कभी देह के सम्बन्ध में, कभी देह के पदार्थ में -

अनेकों में बुद्धि जाती थी। अभी यह सब बदल गया। अभी देह याद रहती या देही? अगर देह में कभी बुद्धि जाती है तो रांग समझते हो ना! फिर बदल लेते हो, देह के बजाय अपने को देही समझने का अभ्यास करते हो। तो संसार बदल गया ना! स्वयं भी बदल गये। बाप ही संसार है या अभी संसार में कुछ रहा हुआ है? विनाशी धन या विनाशी सम्बन्ध के तरफ बुद्धि तो नहीं जाती? अभी मेरा रहा ही नहीं। "मेरे पास बहुत धन है" - यह संकल्प या स्वप्न में भी नहीं होगा क्योंकि सब बाप के हवाले कर दिया। मेरे को तेरा बना लिया ना! या मेरा, मेरा ही है और बाप का भी मेरा है। ऐसे तो नहीं समझते? यह विनाशी तन-धन, पुराना मन, मेरा नहीं, बाप को दे दिया। पहला-पहला परिवर्तन होने का संकल्प ही यह किया कि सब कुछ तेरा और तेरा कहने से ही फायदा है। इसमें बाप का फायदा नहीं है, आपका फायदा है। क्योंकि मेरा कहने से फंसते हो, तेरा कहने से न्यारे हो जाते हो। मेरा कहने से बोझ वाले बन जाते हो और तेरा कहने से डबल लाइट "ट्रस्टी" बन जाते हो। तो क्या अच्छा है - हल्का बनना अच्छा है या भारी बनना अच्छा है? आजकल के जमाने में शरीर से भी कोई भारी होता तो अच्छा नहीं लगता। सभी अपने को हल्का करने का प्रयत्न करते हैं। क्योंकि भारी होना माना नुकसान है और हल्का होने से फायदा है। ऐसे ही मेरा-मेरा कहने से बुद्धि पर बोझ पड़ जाता है, तेरा-तेरा कहने से बुद्धि हल्की बन जाती है। जब तक हल्के नहीं बने तब तक ऊँची स्थिति तक

पहुँच नहीं सकते। उड़ती कला ही आनन्द की अनुभूति कराने वाली है। हल्का रहने में ही मजा है। अच्छा!

जब बाप मिला तो माया उसके आगे क्या है? माया है रूलाने वाली और बाप है वर्सा देने वाला, प्राप्ति कराने वाला। सारे कल्प में ऐसी प्राप्ति कराने वाला बाप मिल नहीं सकता! स्वर्ग में भी नहीं मिलेगा। तो एक सेकण्ड भी भूलना नहीं चाहिए। हद की प्राप्ति कराने वाला भी नहीं भूलता है तो बेहद की प्राप्ति कराने वाला भूल कैसे सकता! तो सदा यही याद रखना कि ट्रस्टी हैं। कभी भी अपने ऊपर बोझ नहीं रखना। इससे सदा हँसते, गाते, उड़ते रहेंगे। जीवन में और क्या चाहिए! हँसना, गाना और उड़ना। जब प्राप्ति होगी तब तो हँसेंगे ना। नहीं तो रोयेंगे। तो यह वरदान स्मृति में रखना कि हम हँसते-गाते और उड़ने वाले हैं, सदा ही बाप के संसार में रहने वाले हैं। और कुछ है ही नहीं जहाँ बुद्धि जाए। स्वप्न में भी रोना नहीं। माया रूलाए तो भी नहीं रोना। मन का भी रोना होता है, सिर्फ आँखों का रोना ही नहीं होता। तो माया रूलाती है, बाप हँसाते हैं। सदा बिहार माना खुश रहने वाले - खुशबहार। और बंगाल माना सदा मीठा रहने वाले। बंगाल में मिठाइयाँ अच्छी होती हैं ना, बहुत वैरायटी होती है। तो जहाँ मधुरता है वहाँ ही पवित्रता है। बिना पवित्रता के मधुरता आ नहीं सकती। तो सदा मधुर रहने वाले और सदा खुशबहार रहने वाले। अच्छा! टीचर्स भी खुशबहार को देख करके सदा-बहार ही रहती हैं ना। अच्छा!

दिल्ली जोन:- दिल्ली को बापदादा "दिल" कहते हैं। नाम है दिल्ली अर्थात् दिल ली। बाप ने आकर दिल ली और आपने आकर क्या किया? बाप को दिल में बिठा दिया। दिल में और तो कोई नहीं है ना! न व्यक्ति, न वस्तु। कोई वस्तु भी आकर्षित करती है तो वह भी दिल में बिठाया ना! वस्तु के पीछे भी अगर दिल लग गई तो बाप भूल जायेगा ना! बाप को भूला तो माया का लगा बम गोला। बम्ब (ँदस् गोला) लगने से कितना नुकसान हो जाता है! तो यह भी बम्ब लगता है तो बहुत नुकसान कर देता है। दिल है ही बाप के लिए तो दूसरा कैसे आ सकता है? जो आसन जिसका होगा, वही बैठेगा ना! अभी प्राइम मिनिस्टर की सीट पर जो फिक्स होगा वही बैठेगा। तो दिल है दिलाराम के लिए। एक ही काम मिला है - बाप को याद करो, बस। जिसके दिल में बाप है वह सदा ही "वाह-वाह" के गीत गाता है और बाप नहीं तो "हायहा य" के गीत गाता है। दुनिया वाले "हाय-हाय" करते और आप "वाह-वाह" करते। स्वयं भी "वाह-वाह" हो गये, बाप भी "वाह-वाह" और ड्रामा में जो कुछ चल रहा है वह भी "वाह-वाह"। तो सदा "वाह-वाह" के गीत गाने वाले हो या कभी "हाय-हाय" भी कर देते हो! मन से भी, स्वप्न में भी कभी "हाय" नहीं निकल सकती। "हाय" क्या हो गया! यह कभी कहते हो? जो हुआ वह भी वाह, जो हो रहा है वह भी "वाह", जो होना है वह भी "वाह।" तीनों ही काल - 'वाह-वाह' है। एक काल भी खराब नहीं हो सकता। क्योंकि बाप भी अच्छे-ते- अच्छा, संगमयुग भी सबसे अच्छा और जो प्राप्ति है वह भी अच्छेते- अच्छी और भविष्य जो

प्राप्त होना है वह भी अच्छे-ते-अच्छा। सब अच्छा होना है तो 'वाह-वाह' के गीत गाते रहो। जहाँ सब अच्छा लगेगा वहाँ इच्छा नहीं होगी। अगर इच्छा होती है तो अच्छा नहीं होता और अच्छा होता है तो इच्छा नहीं होती। क्योंकि अच्छा तब कहेंगे जब सब प्राप्त हो। जब अप्राप्ति होती है तब इच्छा होती है। तो कोई अप्राप्ति है? माताओं को गहने चाहिए? सोना चाहिए? पांडवों को लाख वा पद्म चाहिए? करोड़ चाहिए? नहीं चाहिए? क्योंकि अब के करोड़पति बनना अर्थात् सदा के करोड़ गँवाना। अभी क्या करेंगे? यह झूठी माया, झूठी काया - झूठा क्या करेंगे! शरीर निर्वाह के लिए, दाल-रोटी के लिए तो बहुत मिल रहा है और मिलता रहेगा। बाकि क्या चाहिए? लॉटरी वगैरह चाहिए? कई बच्चे समझते हैं लॉटरी आयेगी तो यज्ञ में लगा देंगे। लेकिन ऐसा पैसा यज्ञ में नहीं लगता। होती अपनी इच्छा है लेकिन कहते हैं लॉटरी आयेगी तो सेवा करेंगे! अभी तो सच्ची कमाई जमा कर रहे हो, इसलिए - 'इच्छा मात्रम् अविद्या।' क्योंकि इच्छा में अगर गये तो इच्छा के पीछे भागना ऐसे ही है जैसे मृगतृष्णा। तो इच्छा समाप्त हो गई, अच्छे बन गये! जब रचयिता ही आपका हो गया तो रचना क्या करेंगे! बेहद के आगे हद क्या लगती है? कुछ भी नहीं है। हद में फँस गये तो बेहद गया।

दिल्ली वालों को तो नशा चाहिए - दिल्ली में जमुना के किनारे महल बनेंगे! तो सिर्फ महल देखने वाले बनेंगे या महल में रहने वाले? सभी राज्य करेंगे या देखेंगे? अच्छा! बाप मिला सब-कुछ मिला। याद और सेवा

के सिवाय और कोई कार्य है ही नहीं। अगर दफ्तर में जाते हो, बिजनेस करते हो - तो भी सेवा के लिए। इस लक्ष्य से कहीं भी जायेंगे तो सेवा होगी। अगर यह समझ कर जायेंगे कि ड्यूटी बजाने जा रहा हूँ, जाना ही है - तो सेवा नहीं होगी। काम करके लौट आयेंगे लेकिन सेवा नहीं कर सकेंगे। सेवा के निमित्त यह कर रहा हूँ - तो सेवा आपके पास स्वत: ही आयेगी और जितनी सेवा करेंगे उतनी और 'खुशी' बढ़ती जायेगी। भविष्य तो है ही लेकिन प्रत्यक्षफल "खुशी" मिलती है। तो फल खाओ, मेहनत नहीं करो। सेवा याद नहीं रहेगी तो मेहनत करनी पड़ेगी। खाली बुद्धि रहना अर्थात् माया का आह्वान करना और बुद्धि को याद और सेवा में बिजी रखा तो सदा ही फल खाते रहेंगे। अच्छा!

दिल्ली वालों को बापदादा विशेष सहयोग देते हैं, क्यों? क्योंकि समय पर सहयोगी पहले दिल्ली निवासी बने हैं। जब यज्ञ में आवश्यक्ता थी तब सहयोगी बनें। तो जो समय पर सहयोगी बनता है उसको ऑटोमेटिकली विशेष सहयोग मिलता है। दिल्ली निवासियों को यह विशेष लिफ्ट है। स्थापना में सहयोग के निमित्त दिल्ली बनी है, उसमें भी विशेष मातायें। तो बापदादा किसका रखता नहीं है, अभी ही देता है। एक का पद्मगुणा करके दे देता है। तो एक्स्ट्रा लिफ्ट हुई ना। जब स्थापना में पहला नम्बर बने तो राज्य में भी पहला नम्बर बनेंगे। समझा? अच्छा!

==========

QUIZ QUESTIONS

==========

प्रश्न 1 :- 'स्वमान और सम्मान - दोनों का आपस मे संबंध हैं' महावाक्यो से बापदादा का क्या अभिप्राय हैं ?

प्रश्न 2 :- आदि पिता ब्रह्मा ने सर्व को किस सम्मान से देखा ?

प्रश्न 3 :- टीचर्स बहनों प्रति बापदादा की क्या शिक्षाए हैं ?

प्रश्न 4 :- स्वराज्य अधिकारी प्रति बापदादा ने क्या समझानी दी ?

प्रश्न 5 :- दिल्ली वालों से बापदादा की क्या वार्तालाप रही ?

FILL IN THE BLANKS:-

(परिवर्तन, सब, फायदा, बुद्धि, बोझ, कल्प, प्राप्ति, स्वर्ग, हल्के, ऊंची, स्थिति, ट्रस्टी, हँसते, उड़ते)

1 पहला-पहला _____होने का संकल्प ही यह किया कि _____ कुछ तेरा और तेरा कहने से ही _____है।

2 मेरा-मेरा कहने से _____ पर _____ पड़ जाता है, तेरा-तेरा कहने से _____ हल्की बन जाती है।

3 सारे _____ में ऐसी _____ कराने वाला बाप मिल नहीं सकता! _____ में भी नहीं मिलेगा। तो एक सेकण्ड भी भूलना नहीं चाहिए।

4 जब तक _____ नहीं बने तब तक _____ _____ तक पहुँच नहीं सकते।

5 सदा यही याद रखना कि _____ हैं। कभी भी अपने ऊपर बोझ नहीं रखना। इससे सदा _____, गाते, _____ रहेंगे। जीवन में और क्या चाहिए!

सही गलत वाक्यो को चिन्हित करे:- 【✓】 【✕】

1 :- जो देता नही हैं तो देवता बनता नही।

2 :- सम्मान देने वाले निंदक को भी अपना शत्रु समझते। सिर्फ सम्मान देने वाले को अपना नहीं समझते लेकिन गाली देने वाले को भी शत्रु समझते।

3 :- मन का भी रोना होता हैं, सिर्फ आंखों का रोना ही नही होता।

4 :- जहाँ सब अच्छा लगेगा वहाँ इच्छा नही होगी। क्योंकि अच्छा तब कहेंगे जब सब प्राप्त हो।

5 :- इच्छा में अगर गए तो इच्छा के पीछे भागना ऐसे ही हैं जैसे मृगतृष्णा।

==========

QUIZ ANSWERS

==========

प्रश्न 1 :- 'स्वमान और सम्मान - दोनों का आपस मे संबंध हैं' महावाक्यो से बापदादा का क्या अभिप्राय हैं ?

उत्तर 1 :- बापदादा कहते :-

..❶ स्वमानधारी बच्चों का ही सारा कल्प सम्मान होता है। एक जन्म स्वमानधारी, सारा कल्प सम्मानधारी। अपने राज्य में भी राज्य-अधिकारी बनने के कारण प्रजा द्वारा सम्मान प्राप्त होता है और आधा कल्प भक्तों द्वारा सम्मान प्राप्त करते हो। अब अपने लास्ट जन्म में भी भक्तों द्वारा देव आत्मा वा शक्ति रूप का सम्मान देख रहे हो और सुन रहे हो। कितना सिक व प्रेम से अभी भी सम्मान दे रहे हैं! इतना श्रेष्ठ भाग्य कैसे प्राप्त किया!

..❷ मुख्य सिर्फ एक बात के त्याग का यह भाग्य है। कौन-सा त्याग किया? देह अभिमान का त्याग किया। क्योंकि देह अभिमान के त्याग बिना स्वमान में स्थित हो ही नहीं सकते। इस त्याग के रिटर्न में भाग्यविधाता भगवान ने यह भाग्य का वरदान दिया है। दूसरी बात - स्वयं बाप ने आप बच्चों को स्वमान दिया है। बाप ने बच्चों को चरणों के दास वा दासी से अपने सिर का ताज बना दिया। कितना बड़ा स्वमान दिया!

..❸ ऐसे स्वमान प्राप्त करने वाले बच्चों का बाप भी सम्मान रखते हैं। बाप बच्चों को सदा अपने से भी आगे रखते हैं। सदा बच्चों के गुणों का गायन करते हैं। हर रोज सिक व प्रेम से यादप्यार देने के लिए

परमधाम से साकार वतन में आते हैं। वहाँ से भेजते नहीं लेकिन आकर देते हैं। रोज यादप्यार मिलता है ना। इतना श्रेष्ठ सम्मान और कोई दे नहीं सकता। स्वयं बाप ने सम्मान दिया है, इसलिए अविनाशी सम्मान अधिकारी बने हो। ऐसे श्रेष्ठ भाग्य को अनुभव करते हो? स्वमान और सम्मान - दोनों का आपस में सम्बन्ध है।

प्रश्न 2 :- आदि पिता ब्रह्मा ने सर्व को किस सम्मान से देखा ?

उत्तर 2 :- बाबा कहते :-

..❶ ब्रह्मा बाप ने सदा छोटे बच्चों को भी सम्मान का स्नेह दिया, होवनहार विश्व-कल्याणकारी रूप से देखा। कुमारियों वा कुमारों को, युवा स्थिति वालों को सदा विश्व की नामीग्रामी महान आत्माओं को चैलेंज करने वाले, असम्भव को सम्भव करने वाले, महात्माओं के सिर झुकाने वाले - ऐसे पवित्र आत्माओं को सम्मान से देखा। सदा अपने से भी कमाल करने वाले महान आत्मा समझ सम्मान दिया ना!

..❷ ऐसे ही बुजुर्ग- आत्माओं को सदा अनुभवी आत्मा, हमजिन्स आत्मा को सम्मान से देखा। बांधेले या बांधेलियों को निरन्तर याद में नम्बरवन के सम्मान से देखा। इसलिए नम्बरवन अविनाशी सम्मान के अधिकारी बने।

प्रश्न 3 :- टीचर्स बहनों प्रति बापदादा की क्या शिक्षाए हैं ?

उत्तर 3 :- बाबा कहते :-

..❶ टीचर्स को बापदादा सदा साथी शिक्षक कहते हैं। तो साथी की विशेषता क्या होती है? साथी समान होता है। बाप कभी बदलता है क्या? टीचर्स भी वायदा और फायदा - दोनों का बैलेंस रखने वाली हैं। वायदे बहुत और फायदा कम हो - यह बैलेंस नहीं होता। जो दोनों का बैलेंस रखते हैं उसको वरदाता बाप द्वारा यह वरदान वा ब्लैसिंग मिलती है। वह सदा दृढ़ संकल्प से कर्म में सफलतामूर्त बनते हैं। साथी शिक्षक का यही विशेष कर्म है। संकल्प और कर्म समान हों। संकल्प श्रेष्ठ और कर्म साधारण हो जाए - इसको समानता नहीं कहेंगे। तो सदा टीचर्स अपने को "साथी शिक्षक" अर्थात् "शिक्षक बाप समान" - इस स्मृति में समर्थ बन चलो।

..❷ बापदादा कहते बापदादा को टीचर्स की हिम्मत पर खुशी होती है। हिम्मत रख सेवा के निमित्त तो बन गये हैं ना। लेकिन अभी सदा यह स्लोगन याद रखो- "हिम्मते टीचर, समान शिक्षक बाप"। यह कभी नहीं भूलना। तो स्वत: ही समान बनने वाला लक्ष्य - "बापदादा" आपके सामने रहेगा अर्थात् साथ रहेगा। अच्छा!

प्रश्न 4 :- स्वराज्य अधिकारी प्रति बापदादा ने क्या समझानी दी ?

उत्तर 4 :- बाबा कहते स्वराज्य अर्थात् जब चाहो, जैसे चाहो वैसे कर्मेन्द्रियों द्वारा कर्म करा सको।

..❶ बापदादा कहते जो कर्मेन्द्रिय-जीत है वही विश्व की राज्य-सत्ता प्राप्त कर सकता है। स्वराज्य अधिकारी विश्व-राज्य अधिकारी बनता है। तो आप ब्राह्मण आत्माओं का ही स्लोगन है कि 'स्वराज्य ब्राह्मण जीवन का जन्म-सिद्ध अधिकार है।' स्वराज्य अधिकारी की स्थिति सदा मास्टर सर्वशक्तिवान है, कोई भी शक्ति की कमी नहीं।

..❷ बापदादा कहते स्वराज्य अधिकारी सदा धर्म अर्थात् धारणामूर्त भी होगा और राज्य अर्थात् शक्तिशाली भी होगा। अभी राज्य में हलचल क्यों है? क्योंकि धर्म-सत्ता अलग हो गई है और राज्यसत्ता अलग हो गई है। तो लंगड़ा हो गया ना! एक सत्ता हुई ना। इसलिए हलचल है। ऐसे आप में भी अगर धर्म और राज्य - दोनों सत्ता नहीं हैं तो विघ्न आयेंगे, हलचल में लायेंगे, युद्ध करनी पड़ेगी। और दोनों ही सत्ता हैं तो सदा ही बेपरवाह बादशाह रहेंगे, कोई विघ्न आ नहीं सकता। तो ऐसे बेपरवाह बादशाह बने हो? या थोड़ी-थोड़ी शरीर की, सम्बन्ध की .... परवाह रहती है?

प्रश्न 5 :- दिल्ली वालों से बापदादा की क्या वार्तालाप रही?

उत्तर 5 :- बापदादा ने दिल्ली वालों से वार्तालाप में कहा :-

..❶ दिल्ली वालों को तो नशा चाहिए - दिल्ली में जमुना के किनारे महल बनेंगे! तो सिर्फ महल देखने वाले बनेंगे या महल में रहने वाले? सभी राज्य करेंगे या देखेंगे? अच्छा! बाप मिला सब-कुछ मिला। याद और सेवा के सिवाय और कोई कार्य है ही नहीं। अगर दफ्तर में जाते हो, बिजनेस करते हो - तो भी सेवा के लिए। इस लक्ष्य से कहीं भी जायेंगे तो सेवा होगी। अगर यह समझ कर जायेंगे कि ड्यूटी बजाने जा रहा हूँ, जाना ही है - तो सेवा नहीं होगी। काम करके लौट आयेंगे लेकिन सेवा नहीं कर सकेंगे। सेवा के निमित्त यह कर रहा हूँ - तो सेवा आपके पास स्वत: ही आयेगी और जितनी सेवा करेंगे उतनी और 'खुशी' बढ़ती जायेगी। भविष्य तो है ही लेकिन प्रत्यक्षफल "खुशी" मिलती है। तो फल खाओ, मेहनत नहीं करो। सेवा याद नहीं रहेगी तो मेहनत करनी पड़ेगी। खाली बुद्धि रहना अर्थात् माया का आह्वान करना और बुद्धि को याद और सेवा में बिजी रखा तो सदा ही फल खाते रहेंगे। अच्छा!

..❷ बापदादा कहते दिल्ली वालों को बापदादा विशेष सहयोग देते हैं, क्यों? क्योंकि समय पर सहयोगी पहले दिल्ली निवासी बने हैं। जब यज्ञ में आवश्यक्ता थी तब सहयोगी बनें। तो जो समय पर सहयोगी बनता है उसको ऑटोमेटिकली विशेष सहयोग मिलता है। दिल्ली निवासियों को यह विशेष लिफ्ट है। स्थापना में सहयोग के निमित्त दिल्ली बनी है, उसमें भी विशेष मातायें। तो बापदादा किसका रखता नहीं है, अभी ही देता है। एक

का पद्मगुणा करके दे देता है। तो एक्स्ट्रा लिफ्ट हुई ना। जब स्थापना में पहला नम्बर बने तो राज्य में भी पहला नम्बर बनेंगे। समझा? अच्छा!

FILL IN THE BLANKS:-

(परिवर्तन, सब, फायदा, बुद्धि, बोझ, कल्प, प्राप्ति, स्वर्ग, हल्के, ऊंची, स्थिति, ट्रस्टी, हँसते, उड़ते)

1 पहला-पहला _____ होने का संकल्प ही यह किया कि _____ कुछ तेरा और तेरा कहने से ____ ही है।

परिवर्तन / सब / फायदा

2 मेरा-मेरा कहने से _____ पर _____ पड़ जाता है, तेरा-तेरा कहने से _____ हल्की बन जाती है।

बुद्धि / बोझ / बुद्धि

3 सारे _____ में ऐसी _____ कराने वाला बाप मिल नहीं सकता! _____ में भी नहीं मिलेगा। तो एक सेकण्ड भी भूलना नहीं चाहिए।

कल्प / प्राप्ति / स्वर्ग

4 जब तक _____ नहीं बने तब तक _____ _____ तक पहुँच नहीं सकते।

हल्के / ऊंची / स्थिति

5 सदा यही याद रखना कि _____ हैं। कभी भी अपने ऊपर बोझ नहीं रखना। इससे सदा _____, गाते, _____रहेंगे। जीवन में और क्या चाहिए!

ट्रस्टी / हँसते / उड़ते

सही गलत वाक्यो को चिन्हित करे:- 【✓】 【✕】

1 :- जो देता नही हैं तो देवता बनता नही। 【✓】

2 :- सम्मान देने वाले निंदक को भी अपना शत्रु समझते। सिर्फ सम्मान देने वाले को अपना नहीं समझते लेकिन गाली देने वाले को भी शत्रु समझते। 【✕】

सम्मान देने वाले निंदक को भी अपना मित्र समझते। सिर्फ सम्मान देने वाले को अपना नहीं समझते लेकिन गाली देने वाले को भी अपना समझते।

3 :- मन का भी रोना होता हैं, सिर्फ आंखों का रोना ही नही होता। 【✓】

4 :- जहाँ सब अच्छा लगेगा वहाँ इच्छा नही होगी। क्योंकि अच्छा तब कहेंगे जब सब प्राप्त हो। 【✓】

5 :- इच्छा में अगर गए तो इच्छा के पीछे भागना ऐसे ही हैं जैसे मृगतृष्णा। 【✓】